7.12.18 (E)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 7006 **IC**

Unique Paper Code : 62051102

Name of the Paper : Hindi – A

Name of the Course : **B.A. (Programme) – CBCS**

Semester : I

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) जैसी मुष तें नीकसै, तेसी चालै नाहिं।

मानिष नहीं ते स्वान गति, बांध्या जमपुर जाँहि ।।

जप तप दीसै थोथरा, तीरथ ब्रत बेसास।

सूर्व सैबल सेविया, यों जग चल्या निरास ।।

अथवा

P.T.O.

munotes.in

हरि म्हारा जीवण प्राण अधार ।।

और आसिरो णा म्हारा थें विण, तीनूँ लोक मँझार ।

थें विण म्हाणे जग णा सुहावाँ, निरख्याँ सब संसार ।

मीराँ रे प्रभु दासी रावली, लीज्यो णेक णिहार ।।

(ख) मरतु प्यास पिंजरा परयौ सुआ समै कैं फेर ।

आदरू दै दै बोलियतु बाइसु बलि की बेर ।।

वे न इहाँ नागर, बढ़ी जिन आदर तो आब ।

फूल्यौ अनफूल्यौ भयौ गँवई-गाँव, गुलाब ।।

अथवा

हीन भएँ जलमीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समानै ।

नीर सनेही को लाय कलंक निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै ।

प्रीति की रीति सु क्यौं समझै जड़, मीत के पानि परें को प्रमानै ।

या मन की जु दसा घनआनंद जीव की जीवनि जान ही जानै ।।

(ग) अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है ।

न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है ।

इस तत्व पर ही कौरवों से पाण्डवों का रण हुआ,

जो भव्य भारतवर्ष के कल्पान्त का कारण हुआ ।।

अथवा

मेरे नगपति मेरे विशाल!

साकार, दिव्य, गौरव विराट्,

पौरूष के पुंजीभूत ज्वाल!

मेरी जननी के हिम-किरीट!

मेरे भारत के दिव्य भाल!

मेरे नगपति! मेरे विशाल! (10×3=30)

2. किसी **एक** कवि का साहित्यिक परिचय दीजिए :

(क) जयशंकर प्रसाद

(ख) नागार्जुन (10)

3. कबीर की भक्ति-भावना विषय पर निबंध लिखिए ।

अथवा

रीतिमुक्त काव्यधारा में घनानंद का स्थान निर्धारित कीजिए । (10)

4. नागार्जुन की 'बादल को घिरते देखा है' कविता का सार लिखिए ।

अथवा

munotes.in

जयशंकर प्रसाद के 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से' कविता में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डालिए। (10)

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए :

(क) हिन्दी भाषा का विकास

(ख) निर्गुण काव्य-धारा का सामान्य परिचय

(ग) रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

(घ) छायावाद

(ङ) प्रगतिवाद

(च) प्रयोगवाद (3×5=15)

munotes.in